Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VII, July-2012, ISSN 2230-7540

बैराठ सभ्यता एवं संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue No. VII, July-2012, ISSN 2230-7540

बैराठ सभ्यता एवं संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

सारांशः - *यह उसी विराट नगर में था जहाँ महाभारत, और द्रौपदी ने अपने पुत्रों को बिताया था। यहाँ पैंट के पर्वत पर भीम तालाब, और जैन मंदिर और अकबर की छतरी है, जहाँ शिकार के दौरान अकबर को छोड़ दिया गया था। विराट नगर की स्थापना यादव राजाओं की थी। यह हमेशा एक एकल और शासित राज्य है। बैराठ (भी वैराट या विराट) जयपुर से* 86 *किमी दूर शाहपुरा-अलवर मार्ग पर स्थित है। बैरथ प्राचीन धरोहरों से सजी एक ऐतिहासिक जगह है। यह महाभारत काल के दौरान मत्स्य जिले की राजधानी थी। महाभारत के अनुसार, पांडवों ने अज्ञात निवास का एक वर्ष यहां बिताया था। बैरथ के पास पहाड़ियों पर एक भव्य बौद्ध मठ के अवशेष भी मिले हैं। यह अवशेष बौद्ध अनुयायियों के लिए पर्यटन की अपार संभावनाएं रखता है। बैराठ मौर्य, मुगल और राजपूत काल का एक स्मृति चिन्ह भी है। मुगल यहां शिकार के लिए आते थे। अकबर द्वारा निर्मित एक उद्यान और जहाँगीर द्वारा निर्मित 'चित्रित' छतरियों और दीवारों के साथ एक असाधारण इमारत अन्य आकर्षण हैं।*

मुख्य शब्दः - *बैराठ का ऐतिहासिक महत्व, बैराठ सभ्यता, पाषाण युग की सभ्यता, ईंटों का उपयोग, ग्रीक मुद्राएं, मिट्टी के बर्तन, अशोक स्तंभ, गोल मंदिर, महाभारत काल, मौर्य सभ्यता स्थल और मुगलकालीन संबंध।*

----------X----------

परिचय:

प्राचीन ग्रंथों में, विराटनगर (बैराठ) का उल्लेख 'मत्स्य जिले की राजधानी' के रूप में किया गया है। इसका विस्तार जयपुर, दौसा, अलवर और भरतपुर तक हुआ। वर्तमान में, बैराठ नगर राजस्थान प्रांत के जयपुर जिले में एक शहर है। इसका पुराना नाम राजस्थान है। विराट नगर राजस्थान के उत्तर में स्थित है। यह भारत के प्राचीन मछली पकड़ने के रहस्यों की राजधानी है। चारों और सुरम्य पहाड़ों से घिरा, प्राचीन मत्स्य देश की राजधानी है। विराटनगर में, पुरातात्विक अवशेषों की संपत्ति बिखरी हुई हो सकती है या भूविज्ञान में हो सकती है। विराटनगर अरावली पहाड़ियों के बीच में स्थित है। विराट नगर, राजस्थान के जयपुर जिले में उत्तर-पूर्व में शाहपुरा अलवर-जयपुर रोड की ओर 25 किमी दूर, अभी भी अपनी पौराणिक ऐतिहासिक विरासत रखता है। जयपुर और राजस्थान के अलवर जिले की सीमा पर स्थित, विराटनगर में पौराणिक गुहा चित्रों, बौद्ध रूप में खंडहर, अशोक के रॉक शिलालेख और मुगल मूर्तिकला के अवशेष हैं। कई जलाशय और जलाशय क्षेत्र को निहार रहे हैं। यह प्रांत प्राकृतिक चमक के साथ परिपूर्ण है। विराटनगर के पास सरिस्का राष्ट्रीय युद्ध एशियाई के तपोवन की तरह, लाखों भक्तों और पर्यटकों के लिए रमणीय और दर्शनीय स्थान है। यदि आप यहां कोशिश करते हैं, तो शहर के केंद्र में प्रसिद्ध प्रवाचन मंदिर आकर्षण का केंद्र है। जो भगवान केशव और विष्णु के साथ देवी शक्ति नहीं है। भगवान केशव के रूप में जो महाभारत में किया गया था। भगवान कृष्ण मंदिर एक ही पैटर्न में दिखाई देते हैं। जो विराटनगर पर्यटन के शहर में सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है।

उद्देश्य:-

1. बैराठ की कला, सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी प्रदान करना।
2. बैराठ की सभ्यता की स्थिति का पता लगाना।

www.ignited.in

3. बैराठ में ऐतिहासिक महत्व के प्राचीन स्थलों की जानकारी प्रदान करना।

परिकल्पना:

1. बैराठ में कला एवं संस्कृति का विकास महाभारत काल से ही हुआ ।

2. बैराठ सभ्यता सुदृढ़ एवं विकसित रही है ।

शोध विधितन्त्र :

इस शोध के अध्ययन में ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। यह शोध ऐतिहासिक उपागम पर आधारित है। इस लेख में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ो को साक्षात्कार, व्यकिगत पत्र, समाचार पत्र, अभिलेख एवं विभन्न इतिहास के स्रोतों प्राप्त किया गया है।

बैराठ का ऐतिहासिक महत्व:

बैराठ राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग 85 किलोमीटर दूर स्थित है। इसका नाम प्राचीन ग्रंथों में विराटपुर के रूप में मिलता है। यह प्राचीन मत्स्य क्षेत्र की राजधानी थी। बैराठ का क्षेत्रफल लंबाई में लगभग 8 किमी और चैड़ाई 5 किमी है। यह आसपास के पहाड़ों से घिरा हुआ है। कस्बे के चारों ओर टीले हैं। इन टीलों में पुरातत्व की दृष्टि से, बीजक की पहाड़ी, भीमजी की डूंगरी और महादेव जी की डूंगरी अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह स्थान मौर्य काल के अवशेष और उसके पीछे की अवधि का प्रतीक है, लेकिन खुदाई की गई सामग्री से यह अनुमान लगाया जाता है कि यह क्षेत्र सिंधु घाटी सभ्यता के प्रागैतिहासिक काल के समकालीन है।

वैसे, मौर्यकालीन अवशेषों के अलावा, मध्ययुगीन अवशेष भी यहां पाए गए हैं। अशोक के भबरू शिलालेख की खोज यहां कैप्टन बर्ट ने चालान से की थी। इनके अलावा यहाँ से बौद्ध स्तूप, बौद्ध मंदिर (गोल मंदिर) और अशोक स्तंभ के प्रमाण मिले हैं। ये सभी अवशेष मौर्ययुगीन हैं। ऐसा माना जाता है कि हूण अक्रांता मिहिरकुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया था। चीनी यात्री युवानच्वांग ने भी अपने यात्रा वृतांत में बैराठ का उल्लेख किया है। विराटनगर नाम से अक्सर लोग भ्रमित हो जाते हैं। विराटनगर नामक एक कस्बा नेपाल की सीमा में भी है। हालांकि, नेपाल का महान शहर विराटनगर नहीं है। महाभारत काल में, भगवान की महिमा में भगवान श्री केशवराय का मंदिर, जिसमें केवल 3 कृष्ण और 3 विष्णु की मूर्तियाँ स्थित हैं। 64 खंभे और 108 टोडियां हैं। यह केशवराय मंदिर विश्व दर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। इस संबंध में पौराणिक, प्रागैतिहासिक, महाभारत और गुप्त काल में न केवल मुगल महत्वपूर्ण घटनाएं शामिल हैं, बल्कि यह राजस्थान की जयपुर और अलवर जिले की सीमा पर स्थित है। चित्रों के अवशेष, बौद्ध प्रमुखों के खंडहर, अशोक और मुगल इमारतों के शिलालेख मौजूद हैं। कई जलाशय और पूल क्षेत्र को निहार रहे हैं। यह प्रांत प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। विराटनगर के पास सरिस्का राष्ट्रीय बाघ अभयारण्य, भर्तृहरि का तपोवन, पांडुपोल नल्देश्वर और सिलिसेह जैसे रमणीय और दर्शनीय स्थल लाखों भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्रसिद्ध श्रीकेशवरैया मंदिर शहर के केंद्र में आकर्षण का केंद्र है। भगवान केशव और विष्णु के साथ कोई देवी (शक्ति) नहीं है। भगवान केशव का रूप महाभारत में था। भगवान कृष्ण का मंदिर उसी रूप में दिखाई देता है। जो विराटनगर पर्यटन नगरी में प्रसिद्ध है।

बिराट सभ्यता:

बैराठ जयपुर जिले में जिला मुख्यालय से लगभग 85 किमी की दूरी पर स्थित है। बैराठ का प्राचीन नाम 'विराटनगर' था। यह एक 'ग्रामीण सभ्यता' थी। इस सभ्यता की पहली खुदाई 1936-37 ई। में दो चरणों में की गई थी। दयाराम साहनी द्वारा किया गया। दूसरा उत्खनन 1962-63 ई। में नीलरत्न बनर्जी और कैलाशनाथ दीक्षित द्वारा किया गया था। बैराठ में कई शैल चित्र पाए गए हैं, जो पाषाण युग की विशेषता थी। गुफाओं में, चट्टान की दीवारों को 'शिकार करने वाले मनुष्यों' से चित्रित किया गया है।

ईंटों का उपयोग:

अभी तक यह नहीं समझा जा सका है कि बैराठ के चारों ओर पत्थरों की कोई कमी नहीं है, फिर भी भवन निर्माण के लिए मिट्टी से बनी ईंटों का उपयोग अधिक किया गया है। मठों, स्तूपों, मंदिरों, घरों और प्लेटफार्मों के निर्माण के लिए मिट्टी की ईंटों का उपयोग किया गया है। हालाँकि यहां के लोगों ने अपने नए घर

बनाने के लिए अधिकांश ईंटों को निकाल लिया, लेकिन कई ईंटें बच गईं। प्राप्त ईंटें ज्यादातर आकार 20:10.5:3 इंच और 21:13:3 इंच हैं। फर्श बिछाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली टाइलें बड़ी यानी 26:26 इंच की होती हैं। इन ईंटों की बनावट मोहनजोदड़ो में मिली ईंटों जैसी है। शायद इन ईंटों का इस्तेमाल बौद्ध मठ बनाने के लिए किया गया होगा। यहां एक खंडहर भवन मिला है जिसमें 6-7 छोटे कमरे हैं। इस इमारत के आसपास ये ईंटें बिखरी हुई पाई गई हैं। विद्वानों के अनुसार, यह खंडहर एक बौद्ध मठ का है। खंडहर की दीवारें 20 इंच मोटी हैं और कमरों का रास्ता बहुत संकरा है। खंडहर के खंडहर आगे गोदामों और प्लेटफार्मों के अस्तित्व का संकेत देते हैं।

ग्रीक मुद्राएँ:

कमरों की खुदाई से प्राप्त सामग्री में मुद्राएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां कुल 36 मुद्राएं मिली हैं। यह कपड़े से बंधे मिट्टी के बर्तन में पाया जाता है। इनमें से 8 पंचमार्क चांदी की मुद्राएं हैं और 28 इंडो-ग्रीक और ग्रीक शासकों की मुद्राएं हैं। बौद्ध मठ से मुद्राएं प्राप्त करना आश्चर्यजनक है, लेकिन यह अनुमान लगाया जाता है कि एक साधु ने इसे छिपाया होगा। इन मुद्राओं से साबित होता है कि यूनानी शासकों का यहाँ अधिकार था। 16 मुद्राएं ग्रीक राजा मिनेंडर की हैं। इससे स्पष्ट है कि 50 ई। तक बैराठ बौद्धों का निवास स्थान रहा होगा। पुरातत्वविदों के अनुसार, बैराठ के बौद्ध मंदिर से प्राप्त सामग्री लगभग 250 ईसा पूर्व थी। 50 ईसा पूर्व तक।

मठ के खंडहरों की खुदाई से मिली अन्य वस्तुएँ: -

कपड़ा:

जिस कपड़े में मुद्रा बाँधी जाती थी वह एक सूती (सूती से बना) कपड़ा होता है जिसे हाथ से बुना जाना चाहिए था।

मिट्टी के बर्तन निर्माण:

यहां मिट्टी के बर्तन भी पाए जाते हैं जो काफी विस्तृत हैं। कुछ में दिलचस्प स्वस्तिक और त्रिरत्न प्रतीक हैं। ये बर्तन बहुत आकर्षक लगते हैं। यहां मिट्टी से बने कई सामान पाए गए हैं, जिनमें पूजा करने वाले, थालियां, लोटा, मिट्टी के बर्तन, घड़े, खप्पर, नृत्य करने वाले पक्षी, कुंडियां आदि शामिल हैं।

उपकरण:

लोहे और तांबे की कृतियाँ यहाँ नहीं मिली हैं, लेकिन इन्हें बनाने के उपकरण ज़रूर मिले हैं।

अशोक स्तंभ:

बौद्ध धर्म के दक्षिण में बिखरे चुनाई के पॉलिश पत्थर इस बात की पुष्टि करते हैं कि किसी समय यहां दो या तीन स्तंभ रहे होंगे, जिसे कई विद्वान अशोक स्तंभ मानते हैं क्योंकि कई टुकड़ों में शेर के आकार के कुछ अंश हैं। विद्वानों का मानना है कि 510-540 ई। के बीच मिहिरकुल के हमलों के कारण उन्हें क्षति हुई होगी। महाभारत काल में भगवान श्री केशवराय का एक मंदिर, जिसमें केवल 3 कृष्ण और 3 विष्णु प्रतिमाएँ स्थित हैं। 64 खंभे और 108 टोडियां हैं। यह केशवराय मंदिर विश्व दर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। इस संबंध में पौराणिक, प्रागैतिहासिक, महाभारत और गुप्त काल शामिल हैं, न केवल मुगल महत्वपूर्ण घटनाओं में, विराटनगर राजस्थान की जयपुर और अलवर जिले की सीमा पर स्थित है। यहां शिलालेख और मुगल इमारतें हैं। कई जलाशय और पूल क्षेत्र को निहार रहे हैं। यह प्रांत प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। विराटनगर कैनिकुत सरिस्का राष्ट्रीय बाघ अभयारण्य, भर्तृहरि का तपोवन, पांडुपोल नल्देश्वर और सिलिसेह जैसे रमणीय और दर्शनीय स्थान लाखों भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्रसिद्ध श्रीकेशवरैया मंदिर शहर के केंद्र में आकर्षण का केंद्र है। भगवान केशव और विष्णु के साथ कोई देवी (शक्ति) नहीं है। भगवान केशव का रूप महाभारत में था। भगवान कृष्ण का मंदिर उसी रूप में दिखाई देता है। जो विराटनगर पर्यटन नगरी में प्रसिद्ध है।

गोल मंदिर:

एक गोल मंदिर के अवशेष भी यहां मिले हैं। विद्वानों का मानना है कि इसे अशोक ने बनवाया था। मंदिर का फर्श ईंटों का रहा होगा और दरवाजों में लकड़ी के दरवाजे होंगे। ये दरवाजे बड़े लोहे के करधनी और टिका द्वारा रखे गए होंगे। मंदिर की खुदाई में पूजा करने वाले, प्लेट, घड़े, खप्पर, नृत्य करने वाले पक्षी, धूपदान आदि मिले हैं।

महाभारत स्थल:

चूंकि महाभारत में 'विराटनगर' का कई बार उल्लेख किया गया है, इसलिए यह माना जाता है कि पांडवों ने अपने अज्ञात समय का कुछ समय यहां बिताया था। बैराठ में एक छोटी पहाड़ी है जिसे 'भीमसेन की डूंगरी' कहा जाता है, जिस पर 'भीमताल' स्थित है। पानी नामक एक बड़ा गड्ढा पानी से भर जाता है। ऐसा माना जाता है कि द्रौपदी की प्यास बुझाने के लिए भीम ने चट्टान को पानी से बाहर निकाल दिया।

www.ignited.in

मौर्य सभ्यता के स्थल:

बैराठ से कई ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जो इस स्थल के मौर्य काल से संबंध को प्रमाणित करती हैं। बैराठ में स्थित 'बीजक की डूंगरी (पहाड़ी)', मौर्य शासक अशोक के 'चैत्य' (गोल बौद्ध मंदिर), 'बौद्ध स्तूप' 'बौद्ध मठ' के अवशेष मिले हैं। ये सभी अवशेष बौद्ध धर्म की 'हीनयान शाखा' के हैं।

बैराठ में बौद्ध स्तूप के अवशेष: -

भब्रु पहाड़ी को ब्राह्मी लिपि में अशोक के दो स्तंभ मिले हैं।

जयपुर राजा सवाई रामसिंह के शासनकाल के दौरान, इस स्थल की खुदाई में एक 'गोल्डन मंजू' मिली थी, जिसमें भगवान बुद्ध की राख के अवशेषों को संरक्षित किया गया था।

मुगल काल से संबंध: -

बैराठ से एक सराय और मुगल छतरी के अवशेष मिले थे। सम्राट अकबर अपनी अजमेर यात्रा के दौरान यहाँ आराम करते थे।

अकबर ने यहाँ एक टकसाल भी बनवाई थी जहाँ अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के काल के सिक्के डाले गए थे।

खुदाई में प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री

एक खंडरनुमा भवन मिला है, जिसमें 6-7 कक्ष हैं और बौद्ध मठ हो सकते हैं।

भवन निर्माण में ईंटों का उपयोग अधिक किया जाता है।

शंख लिपि के प्रचुर प्रमाण हैं।

बैराठ को सूती कपड़ों में बांध दिया गया है।

कुल 36 मुद्राएँ मिली हैं, इनमें से 8 चाँदी के पंच / आहत मुद्राएँ और 28 ताँबे की मुद्राएँ भारतीय-यूनानी शासक मेइंदर / मिलिंद की हैं। इसका मतलब है कि ग्रीस या मिलिंद के साथ व्यापारिक संबंध थे, यहाँ शासन हो सकता है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में बैराठ की यात्रा की थी प् बैराठ सभ्यता का अंत 'विदेशी हूणों के आक्रमण' को माना जाता है

निष्कर्ष:

उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बैराठ कालीन सभ्यता बहुत प्राचीन है जिसका सम्बंध महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। यहाँ पर मौर्यकाल के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता का उत्खनन 1936-37 ईस्वी में दयाराम साहनी द्वारा कराया गया। द्वितीय उत्खनन 1962-63 ईस्वी में नीलरत्न बनर्जी व कैलाशनाथ दीक्षित द्वारा करवाया गया। यहाँ पर उत्खनन में प्राप्त यूनानी मुद्रा, अशोक स्तम्भ, गोल मंदिर, ईंट, मिट्टी के बर्तन आदि प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राजस्थान का इतिहास, कालू राम शर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर।
2. राजस्थान का इतिहास, डॉ गोपीनाथ शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, जयपुर।
3. राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, डॉ के एम गुप्ता, डॉ जे के ओझा एवं गोपाल व्यास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
4. राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति एनसाइकलपीडिया, डॉ हुकमचंद जैन एवं डॉ नारायण स्वामी, जैन पुस्तक भवन, जयपुर।
5. अलवर राज्य का इतिहास, डॉ एस एल कोठारी एवं डॉ बी एस माथुर, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर।
6. बैराठ एवं कोलवी की गुफाओं का रहस्य, डॉ मोहन लाल गुप्ता।

Corresponding Author

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan